RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-11
November -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

लोक-गाथा में प्राप्त गीतों के माध्यम से शहीद मनीराम दीवान का ऐतिहासिक अनुशीलन

प्रवीण बोरा

शोधार्थी, मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर, इम्फ़ाल, मणिपुर-795003

मनीराम दीवान का जन्म 27 अप्रैल, सन् 1806 में असम के शिवसागर नामक जिले में एक उच्च परिवार में हुआ था। उनके पिताजी का नाम राम दत्त और मातृ कौशल्या देवी थी। मनीराम दीवान जी का सम्पूर्ण नाम मनीराम दत्त बरुवा है। वे असम के प्रथम किसान बने जिन्होनें चाय उत्पादन के कार्य में अपने को शामिल किया। ब्रिटिशाधीन विभिन्न उच्च पद पर कार्य सम्पन्न करते हुए उन्हें 1839 ई॰ में नव निर्मित 'आसाम टी कंपनी' में 'दीवान' पद पर नियुक्त किया गया था। और उसी समय से मनीराम दत्त बरुवा को मनीराम दीवान नाम से जाना जाता है।

असम के लिए 1857 माने अंग्रेजों के विरोध होने वाले सशस्त्र-विद्रोह का दौर। जिसमें मनीराम दीवान के नेतृत्व में कन्दर्पेश्वर सिंह को राजा बनाने की सतत प्रयास चल रहे थे। सशस्त्र-विद्रोह की ब्लूप्रिंट तैयारी करते हुए कलकता से भेजे गए पत्र दुर्भाग्यबस अंग्रेजों के हाथ लग गए और मनीराम दीवान को कलकता में ही बंदी बना लिया गया। इसी समय उन्हें विचाराधीन के लिए असम के जोरहाट में लाया गया और राजद्रोह की अपराध में उनके सहयोगी पियोली बरुवा के साथ सन् 1858 के 26 फरवरी में इन दोनों महान देशभक्तों को खुले मैदान पर फाँसी दे दी गयी।

लोकगाथा शब्द अँग्रेजी के 'बैलेड' (Ballad) शब्द का समानार्थी है। यह ग्रामगीत या लोकगीत का एक रूप है। इंग्लैंड में बैलेड उस काव्यरूप को कहते हैं, जिसमें सीधे-सादे छंदों में कोई सीधी, सरल कथा कही गई हो, जो या तो लोककंठ में ही उत्पन्न और विकसित होता है या लोकगाथा के सामान्य रूप विधान को लेकर किसी विशेष कवि द्वारा रचा जाता है, जिसमें गीतात्मकता और कथात्मकता दोनों होती हैं और जिसका प्रचार जन-साधारण में मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होता रहता है। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार इसका अर्थ *"a poem or song narrating a story in short stanzas."*

लोक का आशय जनमानस से हैं और गाथा माने कविता, गीत या कहानी प्रधान कविता को कहा जाता है। लोकगाथाओं की उत्पत्ति सर्वप्रथम तब हुई, जब समाज अविभक्त और एक इकाई के रूप में था। इसीलिए लोकगाथाएँ प्रारम्भ में समूचे समाज की संपत्ति थी, सभी इन्हें गाते और अपनी और से उनमें कुछ-न-कुछ जोड़ते-घटाते थे। इस तरह एक स्थान से दूसरे स्थान में और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में यात्रा करते रहने के कारण उनका रूप नित्य परिवर्तनशील रहा।

असम में भी प्राचीन काल से ही इसी तरह की लोकगीत, लोकगाथा जनसमूह में प्रचलित है। असम में इसी लंबी कहानीपरक गीतों को 'मालिता' कहा जाता है। मालिता शब्द असमिया 'माला' शब्द से आया है। मालिता की तात्पर्य है कि यह लोकगाथा या गीतिव्यंजक कहानी एक माला की तरह फूलों से धारावाहिक रूप में बंधा होता है।

प्रस्तुत आलेख में असम के लोक में प्रचलित मनीराम दीवान जी के जीवनपरक कुछ मालिताओं (लोकगाथा) की संक्षिप्त विवरण देने की सामान्य प्रयास किया गया है। मनीराम दीवान के मालिताओं की रचना शैली प्रायः असम के बिहु-नामों की रीतियों से गाएँ जाते हैं। प्रत्येक चरण मालिता अपने आप में स्वयंसिद्ध है हालाँकि सभी मालिताओं को एकत्र करने से ही किसी कहानी का स्वरूप पता चलता है।

किसी भी कार्य को करने से पहले जिस तरह मंगलाचरण या ईश्वर की स्तुति होती उसी प्रकार लोकगीतों के प्रारम्भ में भी ईश्वर को प्रार्थना करते हुए मालिताओं को आगे बढ़ाया जाता है। जैसे-

आई सरेचती देवी पारेवती
तोमलोई बढ़ाई जाऊ चाउल
पाहरा पदके सुवराई दि जाबा
गीतर भागी जाबा आउल॥
चांदक सेवा करू सूर्यक सेवा करू
पार्वतीक सेवा करू
भरली आइकु करू सात सेवा
मनीरामर भनिता जुरु ॥

यहाँ मनीराम दीवान की लोकगाथाओं को शुरू करने से पहले रचनाकार सरस्वती देवी,पार्वती देवी तथा सूर्य देवता और चाँद को नमन करते हैं और उनके चरण में प्रसाद अर्पण करते हैं।साथ ही यह शक्ति या आशीर्वाद याचना करते हैं कि लोकगीतों की गायिकी निरंतर से बिना रुकावट की चले तथा बिना किसी गलतियों से सम्पन्न हो जाए।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मनीराम की अंग्रेजों से गहरे संबंध तथा 1857 के गदर के समय सशस्त्र-विद्रोह की भूमिका, इस दुरंगी जिंदेगी के कारण विद्वानों में विवादास्पद रही है कि कुछ उन्हें शहीद मानते हैं तो कुछ अवसरवादी। उस समय परिस्थिति कुछ ऐसी रही जिसके बदौलत मनीराम दीवान पर घूसख़ोरी का आरोप लगा। उनके देशप्रेमी और देशद्रोही होने पर सवाल उठने लगे। इसी बीच जनता में कुछ लोकगीत प्रचलित हुआ जिसमें मनीराम दीवान के प्रति द्वेष प्रतिफलित होता है-

इयातो मनीराम सियातो मनीराम
मनीरामे कि काम कोरे,
फिरंगी बोंगालक भेटी साधी साधी
रजाती हबलोई पांगे॥

यहाँ मनीराम पर आरोप लगाते हुए कहा गया है कि मनीराम यहाँ भी होता है वहाँ भी होता है अर्थात हमारे साथ भी होता है और अंग्रेजों के साथ भी। वह क्या काम कर रहा है? क्या वह हमारे साथ दोहरी चाल खेल रहा है? वह अंग्रेजों को हमारे संपत्ति सौगात में देकर खुद राजा होने की योजना बना रहा है।

द पानीत बाबोरे नाऊ मोर देउता
बकलियत बाबोरे नाऊ
मनीरामर खुचनित खाजाना बाढ़ीसे
राइजे दिले साऊ॥

इस लोकगीत में मनीराम दीवान को जनता अभिशाप देते हुए व्यंग रूप से कहा है कि पानी की गहराई हो या न हो मनीराम की वजह से हमारे नौका डूबते ही जा रही है परंतु अंग्रेजों से संबंध बनाते हुए मनीराम की ख़जाना दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। सर्वसाधारण को विपत्ति में धकेलने के कारण सभी उन्हें श्राप देते हैं।

केलोई एनेकोया होलि ओई मनीराम
केलोई एनेकोया होलि
देश पातिबरे नहल चारीदिने
राइजोरे दुरुही होलि॥

यहाँ कहा गया है कि मनीराम तुम ऐसे क्यों हुए। क्यों ऐसा किया अपने देश के साथ। देश गठन की चार दिन भी नहीं हुए है आज तुम सर्वसाधारण के लिए कपटी बन चुके हो।

नाज़िरा में चाय का कारख़ाना बनाने हेतु और साहबों का बँगला खड़ा करने के लिए प्राचीन आहोम नगर गढ़गाँव के प्राचीन स्मारक भी नष्ट किए गए। इसमें मनीराम की भूमिका के विरुद्ध एक लोकगीत में कहा गया है कि-

फिरंगीर बंगला सारिकाई सालिया
ताते बोहे फिरंगीर मेल।
मनीरामर खुहनीत राज कारेंगे भांगि
बंगलात लगाले बेर।।

अर्थात चहारदीवारी के भीतर फिरंगी ने बैठक की। उनका बंगला बनाने के लिए मनीराम ने उन्हें राजमहल तोड़ने की प्रेरणा दी।

यहाँ तक कि आहोम राजाओं के जो पिरामिड जैसे मैदाम थे उन्हें भी खोदकर उनकी ईंट बँगलों में लगा दी गयी और मैदाम के भीतर रखा सोना-चाँदी चाय की पेटियों में भरकर ब्रिटिश ले जाने लगे। इन कामों में भी मनीराम का हाथ होने का संदेह लोकगीतों में व्यक्त हुआ है-

खिटिंग खिटिंग करा शबदत सुनिलो
किनु अमंगलिया कथा।
मनीराम देवाने मैदाम खंदाले
काकनु बतरा कबा॥

खिटिंग खिटिंग की आवाज के भीतर अमंगल बातें सुनाई पड़ी। मनीराम दीवान ने मैदाम यानि राजाओं की समाधि खुदवाएँ।

भतियाई गलेगोई कंपानीर जहाजखन
भीतरे चाहार बाकच।
देशर धन-सोन निये दोमे-दोमे
रखिया-परिया लगत॥

कंपनी का जहाज लौटकर चले गए और साथ में हमारे देश का सोना-चाँदी पहरेदार सहित चाय की पेटियों में भर-भर कर ले गए।

इसी तरह अंग्रेजों के साथ मनीराम दीवान का यह प्रेम बहुत लंबा न चल सका। अब मनीराम ने खुले दिमाग से अँग्रेजी राज के बारे में सोचना शुरू किया। उन्हें लगा कि इससे देश को जितना लाभ हुआ है उससे अधिक हानि हुई है। जमीन पर लगान इतनी बढ़ गयी कि बड़े-बड़े खेतिहरों को भी जमीन गिरवी रखकर लगान चुकानी पड़ी। अफीम का प्रचलन अंग्रेजों ने इसलिए शुरू किया कि इसके लिए लोग चाय बागानों में काम करेंगे। दुखी होकर मनीराम ने पुराने राज को फिर से स्थापित करने की सोची।सन् 1853 से सन् 1857 तक की समयसीमा में मनीराम दीवान ने असम देश के लिए जी-जान लगा दिया था। किसी भी प्रकार से अंग्रेजों को असम से भगाने की कोशिश में लगे हुए थे जिससे उनकी देशप्रेम की भाव प्रतिफलित हुई है। इसी उद्देश्य से अंग्रेजों के ख़िलाफ़ अंत में 1857 को सशस्त्र-विद्रोह की ढाँचा तैयार हुई और इसी राजद्रोह के कारण अंग्रेजों ने मनीराम दीवान को फाँसी पर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

चढ़ा दी। मनीराम दीवान की शहीद हो जाने पर उनके अंतर्वेदना में लोक में मालिताएँ प्रचलित है। जैसे-

छालत मलडीले छालदोई कुमुरा
टेकेलित मलडीले लोन
माटित मलडील मनीराम देवान ओई
नेकांदि थाकिब कोन?

कुम्हड़ा छत के ऊपर ही सूख गया। नमक कलश के भीतर ही विलीन हो गया है। इसी तरह मनीराम दीवान भी इसी मिट्टी में विलीन हो गया, न रोते हुए कौन रह सकता है?मनीराम दीवान शहीद हो जाने के पश्चात इस लोकगीत के माध्यम से लोगों की दुख अभिव्यक्त हुआ है। उसके दुख में ही और बहुत सारे लोकगीत असम में प्रचलित है-

अतिकोई सेनेहर मुगारे महुरा
तातुकोई सेनेहर माकु
तातुतकोई सिकुन मनीराम देवान ओई
नेकान्दी केनेकोई थाकु?

सबसे प्यारा है हाथ करघा की रेशम। उससे भी प्यारी भरनी। हाय ! उससे भी और प्यारी मनीराम दीवान। कैसे आँसू रोके ?

देश पातिबलोई उलालि मनीराम
जंतराइ मारिले हाँसी
लगर समनियाई शतरु शालिले
ललि जोरहाटत फाँसी॥

रजा पातिबोलोई उलालि मनीराम
जंतराइ मारिले हाँसी
लराकोई तिरुता एथानित पेलाली
ललि जोरहाटत फाँसी॥

मनीराम गोइछिले बंगालर देशलोई
रंगपुरत मारिले हाँसी
कानर गुना छिगी अमंगल मिलिल ओई
दिले जोरहाटत फाँसी॥

इन तीनों मालिताओं में शहीद मनीराम दीवान जी के प्रति दुखद भाव विदित होता है।अपना मित्रों ही उनके लिए शत्रु निकला। यहाँ कहा गया है कि अपना लड़का और पत्नी को छोड़कर स्व देश व राजा बनाने हेतु तू निकल पड़ा था लेकिन ऐसी अमंगल हुई कि अंत में जाकर जोरहाट में फाँसी जैसी प्राणदंड मिली।

मनीराम दीवान की ऐसी और भी बहुत सारे लोकगीत है जिसमें करुणा स्फुटित हुआ है-

रूपर धुंवाखुवात खालि ओई मनीराम
सोनर धुंवाखुवात खालि
रजा हबलोई उलालि मनीराम
डिंगित छिपेजोरी लोलि॥

इसके माध्यम से मनीराम दीवान जी की दौलतमंद होने की आभास मिलता है। इसमें कहा गया है कि मनीराम सोना और चाँदी दोनों से तैयारी हुक्के में पीते थे। अच्छी जिंदेगी जी रहा था परंतु देश की भला करने निकला तो फाँसी पर चढ़ना परा।

इसी तरह नीचे की लोकगीतों में भी मनीराम दीवान की करुणात्मकता और अंग्रेजों द्वारा उन्हें किया गया अत्याचारों के बारे में उल्लेख मिलता है। मानो उनके दुख में ही सूर्य-चाँद, आकाश-धरती आदि सभी पीड़ा में है। जैसे-

उजाए आहिले मनीराम देवान ओई
माजुलीत चटाले चटी
रंगपुर जिलारे बरशी आनिले
डिंगित छिपेजरी दिलि॥
जोरहाटत नुरूबि आदा मोर कुटुम ओई
गोलाघाटत नुरूबि आदा
सातुता गेराजर छिपाही
दिले मनीरामक खेदा॥

चान्दु लरिसे सुरुजु लरिसे
लरिल बसुमती आई
बार पाल रनुवाइ खेदिब लागिसे
किनो मनीरामर बिलाई॥

इतिहासकारों ने मनीराम को 'प्राचीन असमिया कुलीनों में अंतिम और प्रथम बुर्जुआ' कहा है। स्पष्ट है कि उनके व्यक्तित्व में अंतर्विरोध थे। लेकिन अंत में मनीराम अंग्रेजों की बजाय जनता के हृदय में विराजे। उनका जीवन 1857 के कई रहस्यों पर प्रकाश डालता है। उपर्युक्त लोकगाथाओं के माध्यम से मनीराम दीवान की कर्म और जीवन का कुछ आभास जरूर मिलता है। जिस तरह इतिहासकारों के बीच आज भी मनीराम दीवान देशभक्त थे या देशद्रोही इसके उत्तर विवादास्पद रही है उसी तरह उनके लोकगीतों में भी उनके दो रूप दिखाई पड़ती है। अंत में यही कहना चाहूँगा कि मनीराम दीवान पर प्रचारित लोकगीतों का अध्ययन-विश्लेषण एक बड़े पैमाने पर क्षेत्र-अध्ययन से संभव हो सकता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भिका

1. शर्मा, वेणुधार : 1915,"मणिराम देवान" मानुह प्रकाशन, रिहाबारी गुवाहाटी-785690
2. गोगोई, लीला : 1957,"मणिराम देवानर गीत"
3. डॉ॰ अमरनाथ : 2012,"हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 110002
4. प्रधान, गोपाल : 2008,"सुदूर असम में सन् सत्तावन की अनुगूँज" समकालीन जनमत (पत्रिका), इलाहाबाद-211002

RRIJM 2015, All Rights Reserved